ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

प्रभा खेतान के 'पीली आंधी' उपन्यास में चित्रित मारवाड़ी समाज की नारी संवेदना

KEY WORDS: मारवाड़ी, व्यावसायिक, स्वानुभूति, देषावर, वेदना, विरह, बिनणी, हिंडोला, रेगिस्तान, धरती

सती भारती दयानंद

षोधार्थी, कुवेंपू विष्वविद्यालय, षिमोगा–कर्नाटक पता–महावीर टेक्सटाइल, गांधीबाजार, षिमोगा, कर्नाटक– 577203

ABSTRACT

प्रभा खेतान हिंदी उपन्यास जगत की प्रमुख महिला उपन्यासकार हैं। आपकी रचनाओं की आधारभूमि राजस्थान का मारवाड़ी समाज रहा है। आपकी लेखनी में स्वानुभूति के दर्षन होते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में सुराणा परिवार के पुरूष अपने व्यावसायिक कारणों से राजस्थान को छोड़कर कलकत्ता चले जाते हैं। कलकत्ता में रहकर अपनी आर्थिक उन्नति तो परिवार अवष्य करता है। किंतु अपने पारिवारीक मूल्यों के साथ उसका संघर्ष कहीं न कहीं बढ. जाता है। आर्थिक उन्नति परिवार जनों से एक अनकही दूरी बना देती है। सबकुछ होता है किंतु समय का हमेषा के लिए अभाव बन जाता है। अंत में जब यह बात समझ आती है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। जो सिर्फ पछतावा देकर जाती है।

'पीली आंधी' उपन्यास हिंदी साहित्य के प्रमुख महिला उपन्यासकारों में से एक प्रभा खेतान द्वारा रचित है। इसको लोकभारती प्रकाषन प्रयागराज द्वारा प्रकाषित किया गया हैं। प्रभा खेतान का स्वयं का संबंध मारवाड़ी परिवार से रहा है। इसलिए उन्होंने अपने उपन्यासों में जब भी मारवाड़ी समाज का चित्रण किया है, उसमें उनकी स्वानुभूति का दर्षन अवष्य ही होता है। उपन्यासकार ने स्वयं मारवाड़ी परिवार में नारी चरित्रों के जीवन को नजदीक से देखा है। इसलिए नारी वेदना के जो यथार्थ दर्षन प्रभा खेतान के उपन्यासों में होते हैं वह कतिपय कहीं ओर नहीं मिलते हैं। 'पीली आँधी' उपन्यास में लेखिका ने राजस्थान के एक मारवाड़ी परिवार जो अपनी कट्टर व्यावसायिक सोच के साथ राजस्थान के छोटे से कस्बे से कलकता जैसे महानगर में रूंगटा हाउस के रूप में स्थापित होता है, उसके उन अनदेखे पहलूओं को कथा के रूप में पिरोया है। मारवाड़ी परिवारों में व्यवसाय एवं आर्थिक उन्नति के प्रति एक प्रकार की दृढ़ता रहती है। इसके लिए वे अपने परिवार से दूर जाने से भी नहीं हिचकिचाते। उनकी इस देषावरी का सबसे ज्यादा प्रभाव उनकी विवाहिताओं पर पड़ता है। जो परिवार में आने के बाद कुछ दिनों या महिनों में ही अपने पति से दूर हो जाती है। परिवारजनों के बीच उनकी स्थिति अत्यंत एकाकी हो जाती है। परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के बोझ को ढोती रहती हैं, इंतजार करती रहती है अपने पति का सालों साल तक।

प्रस्तुत उपन्यास 'पीली आँधी' में प्रभा खेतान ने अनेकों नारी पात्रों का सृजन किया है। इन नारी पात्रों के माध्यम से उन्होंने मारवाड़ी परिवारों में जीवन यात्रा का पूरी करती नारियों की कथा व अनुभूतियों को साकार करने का कार्य किया है। मारवाड़ी परिवारों की नारी जिस सबसे बड़ी वेदना का सामना सबसे पहले करती है, वह है अपने पति से विरह। षादी के बाद कुछ दिन या महिनों में ही उनके पति दूर–देषों में अपने व्यापार के लिए निकल जाते हैं, ऐसे में नवविवाहिता स्त्री के पास उसके विरह की वेदना ही षेश रह जाती है। अपने पति के इंतजार में उसके नेत्र हमेषा सजल रहते हैं। विरह का एक चित्र देखिए,'' मुकलावे के बाद जिसके साथ मैं बस दस दि नही रह सकी थी। उसके हृदय मेंएक हल्की–सी पीर उठी। एक कसक, एक रीति चीख...क्यों आखिर क्यों हमारे पुरूशों को दिसावरी में जान पड़ता है? और वह भी इतनी कम उमर में?''[1] परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वहन करती हैं, किंतु स्वयं के लिए हमेषा असहाय ही पाती हैं। उपन्यास की छोटी बिनणी व बड़ी बिनणी दोनों ही इसी विरह वेदना की षिकार हैं। जिनके हृदय सदैव अपने पति की याद में विकल रहते हैं। किंतु देषावरी पर गए पति कब वापस आएंगे यह मात्र उनके सोचने में ही सीमित होकर रह जाता है। पति के इंतजार में विकलती छोटी बिनणी के मन की विरह का चित्रण देखिए,'' षायद वह अपने आपसे कुछ और बातें करती। षायद वह फिर उस कागे के बारे में सोचती जो पिया के पास उसका संदेष लेकर जाएगा, षायद यह भी सोच लेती कि क्या पता दिसावरी करने गया हुआ उसका पति आज ही लौट आए और वह हल्के–हल्के गुनगुना उठी।''[2] जहाँ एक और मारवाड़ी परिवारों में अपने पति का व्यापार के लिए दूर जाना परिवार की बहुओं के लिए विरह वेदना का कारण बन जाता, वहीं दूसरी ओर अपने पति के साथ अपना घर छोड़कर अगर वे चली भी जाती तो भी मन उनका अपनी मिट्टी अपने लोगों में ही अटका रहता। अपने गाँव में भले ही वे घूंघट के पार से ही सब देख पाती हों, पर इस परायी धरती पर आकर उनको अपनी धरती और अपने लोगों की याद आने लगती। राधा बाई के मन की व्यथा का चित्रण करते हुए लेखिका लिखती हैं,'' राधा बाई को पहले पानी का उच्छृंखल बहाव अच्छा लगा। अब सूखी हवा की याद आने लगी। राधा बाई चिड़चिड़ाने लगती, जब देखती कि, मरी बरसात दस–दस दिन तक रूकने का नाम नहीं लेती, सूरज निकला धरती थोड़ी तपी नहीं कि उमस बढ़ी और फिर वापस वही काले–काले बादल घूम–घूम कर, नाच नाच कर बरसते हुए, पेड़ का पत्ता पत्ता टपकता हुआ, मेंढ़कों की टर्र–टर्र सापं–बिच्छुओं की भरमार। बाजरा तो आंख से नहीं दिखता। कैर–सांगर को बचा–बचाकर बना लेती। अगल–बगल दो–चार मारवाड़ी परिवार बस गए थे। उनको याद आता सावन का हिंडोला, लेकिन यहां पर मैं कहाँ जाऊं? किस हिंडोले पर झूला झूलें? गांव में पर्दा होते हुए भी आने–जाने की छूट थी। कम से कम कुंए पर तो हम औरतें चली जाती सबेरे–षाम। कुंए पर तो एक मेला ही लग जाता था। किसी के पीहर से यदि कोई नयी ओढ़नी आई तो वह जरूर ओढ़कर आती, कोई अपने चूड़े का मुठिया दिखाती। इस देस में तो और बड़ा बंधन है। पति–पत्नी दोनों दुखी रहते। माधो अपने में व्यस्त और छोटा सांवर खेलने–कूदने में या फिर मां की गोदिया तोड़ता।''[3]

उपन्यास में एक ओर गाँव की नेवगण व बूढ़ी महिलाएं हैं जो बालपन से ही घूंघट की प्रथा का समर्थन करती है। एक संवाद देखिए,'' सायण जी, अभी से सर पर मत चढ़ाइए। मुकलावे के बाद ही घूंघट कम करवाइएगा।''[4] वहीं दूसरी और राधा बाई जैसे प्रगतिषील सोच वाले महिला पात्र भी हैं जो इन प्रथाओं से आगे निकलकर सोचते हैं। जैसे राधा बाई अपनी नई बीनणी को कहती है,'' मेरे सामने ज्यादा लंबा घूंघट निकालने की जरूरत नहीं है। घर में अपने दो ही तो हैं...सास–बहू के बीच कैसी षरम।''[5] लेखिका ने नारी पात्रों में परम्पराओं और धार्मिक आास्था के प्रति समर्पण की भावना को प्रमुखता से उकेरने का कार्य किया है। नारी पात्र चाहे कहीं भी रहें किंतु वे अपनी धार्मिक मान्याताओं के प्रति हमेषा समर्पित रहती हैं। उपन्यास में अनेकों स्थान पर इसका चित्रण मिलता है। जहाँ नारी पात्र धार्मिक मान्यताओं के सामने नत–मस्तक होते दिखाई गयी हैं। देखिए, '' राधा बाई ने मन ही मन जीण माता का सिमरन किया–'' हे माता मेरी गलती माफ करना, मैं ठेठ देष आकर तेरे मंदिर में अपने बेटे–बहु को जोड़े से भेजूंगी, रातिजुगा करवाऊंगी। चांदी का कलष चढाऊंगी, तू मेरे बेटे की ओर देख, इसका दूसरा ब्याह करवा दे।''[6] राधा बाई का एक ओर संवाद,'' यह सब करम का लेख है। बेचारे माधो की तकदीर में सुख नहीं, मां–बाप तो पहले ही चल बसे अब लुगाई भी ऐसी आ गई।''[7] लेखिका ने उपन्यास में मारवाड़ी परिवारों में नारी पात्रों की वेदना और संवेदना को षब्दों के माध्यम से जीवित कर दिया है। उपन्यास में नारी पात्रों का स्थान बहुत प्रभावी रूप से उकेरने का प्रयास किया गया है। मारवाड़ी समाज की व्यावसायिक हितों के प्रति कट्टरता के कारण उनके परिवारों की नारियाँ ही सबसे ज्यादा प्रभावित होती हैं। उपन्यास में ठेठ गंवई नारी पात्रों से लेकर षहर में जाकर नए कलेवर को स्वीकार करने वाले नारी पात्रों को चित्रित किया गया है। एक और जहाँ बालपन में परिवार द्वारा कर दिए जाने वाले विवाह संबंधों के लिए मूक स्वीकृति देकर जीवन पर्यंत उस संबंध के प्रति अगाध समर्पण को जीवित करने वाली माधो की बहु है। जिसने अपने सुंदर ना होने व बीमारी से ग्रस्त होने को अपना दोश मानकर अपना सर्वस्व अपने परिवार की सेवा में समर्पित कर दिया है। उपन्यास में प्रगतिषील और पुरातनपंथी सोच रखने वाले नारी चरित्रों को कुषलता से उकेरा गया है। नारी पात्रों की कहीं कहीं अभिव्यक्ति मुखरता के साथ की गयी है। उपन्यासकार ने उपन्यास के अंत में सुराणाजी के माध्यम से नारी चरित्रों की अत्यंत मार्मिक व संवेदनषील अभिव्यक्ति की है। देखिए,'' मैं धीरे–से अपनी अलमारी खोलता हूँ.....इसकी चाभी हमेषा मेरे पास रही, मेरे बाद ताला तोड़ा जाएगा.. ..यह चुनड़ी....यह चुनड़ी है...मैंने ओढ़ाई थी। और फिर वह इसे यहीं रख गई थी...यह चुनड़ी और यह डायरी...पत्नी को संभलना देना है...निर्दोश मासूम, मूक–बधिर सी मेरी पत्नी, सरल समर्पण के अलावा जिसने कुछ नहीं जाना, हम लोग कब तक ऐसी सतियों की प्रथा को जिंदा रखेंगे। और वह, जो सफेद साड़ी में लिपटी हुई...आंसू भरी आँखों से कह रही थी....सुराणाजी आपके कहने से चुनड़ी तो मैंने ओढ़ ली लेकिन मांग कैसे भरू? सुराणाजी सिंदूर का दाग इतनी जल्दी तो मिटेगा नहीं। साबुन से धोने पर रगड़–रगड़ कर पोंछने पर भी दो–चार दिन तो ललाट पर ललाई रह ही जाती है.....जानते हैं सुराणाजी, जब बड़े बाबू का स्वर्गवास हुआ, तब मैं षीषे में अपनी सूनी मांग देखा करती और धीरे–धीरे मांग से रगड़–रगड़ कर हिंगलू का दाग मिटाती रहती...मैं उस समय बहुत रोती थी सुराणाजी, उस समय बहुत रोती थी।''[8]

सारांष

प्रभा खेतान द्वारा रचित 'पीली आँधी' उपन्यास में मारवाड़ी परिवारों में नारी की स्थिति का जीवंत चित्रण हैं। उपन्यास को पढ़कर मारवाड़ी परिवार में नारी के चरित्र के विभिन्न आयामों को अपनी आँखों के सामने अनुभव किया जा सकता हैं। उनके द्वारा कहीं भी नारी पात्र को श्रेश्ठ या दुर्बल दिखाने का प्रयास नहीं किया गया है। अपितु नारी की परिवार में भिन्न–भिन्न भूमिकाएं तथा एक–दूसरे से भिन्न व्यवहार चित्रित किए गए हैं। परिस्थितियों के अनुसार नारी की अनुभव की जानी वाली पीड़ा व वेदन का सषक्त चित्रण करने में प्रभा खेतान सफल रहीं है।

आधारग्रंथ

1. पीली आँधी– प्रभा खेतान, 2010, लोकभारती प्रकाषन, प्रयागराज, पृश्ठ संख्या 05
2. पीली आँधी– प्रभा खेतान, 2010, लोकभारती प्रकाषन, प्रयागराज, पृश्ठ संख्या 06
3. पीली आँधी– प्रभा खेतान, 2010, लोकभारती प्रकाषन, प्रयागराज, पृश्ठ संख्या 48
4. पीली आँधी– प्रभा खेतान, 2010, लोकभारती प्रकाषन, प्रयागराज, पृश्ठ संख्या 69
5. पीली आँधी– प्रभा खेतान, 2010, लोकभारती प्रकाषन, प्रयागराज, पृश्ठ संख्या 69
6. पीली आँधी– प्रभा खेतान, 2010, लोकभारती प्रकाषन, प्रयागराज, पृश्ठ संख्या 62
7. पीली आँधी– प्रभा खेतान, 2010, लोकभारती प्रकाषन, प्रयागराज, पृश्ठ संख्या 63
8. पीली आँधी– प्रभा खेतान, 2010, लोकभारती प्रकाषन, प्रयागराज, पृश्ठ संख्या 299